दलितों व शोषितों का पाक्षिक पत्र
विज्ञापन के लिए केन्द्रीय सरकार व राज्यों द्वारा स्वीकृत

हमायती

सम्पादक–डॉ0 सोहनपाल सुमनाक्षर

❑ वर्ष 58 ❑ अंक-6 ❑ दिल्ली ❑ जनवरी 2020 (द्वितीय) ❑ मूल्य : 2 रु.

दलित उत्पीड़न से उठते सवाल

स्वामी अग्निवेश

आजादी के सात दशक बाद भी देश में दलितों का उत्पीड़न बंद नहीं हुआ है। समाचार पत्रों के माध्यम से आए दिन दलित उत्पीड़न की घटनाएं सामने आती रहती हैं। दलितों के साथ घटित आपराधिक घटनाएं कुछ दिन मीडिया की सुर्खियां बनने के बाद गायब हो जाती हैं। यही हाल गुजरात के बोताद में एक दलित उप सरपंच मांजीभाई सोलंकी की हत्या के बाद भी हुआ। मीडिया अब खामोश है और मांजीभाई के परिजन न्याय की आस में हैं, जो शायद ही उन्हें मिलेगा। यहां यह देखना दिलचस्प है कि मांजीभाई कोई आमत नागरिक नहीं थे। पिछले बीस साल से उनके परिवार के लोग गांव के सरपंच चुने जा रहे हैं। अभी मांजीभाई की पत्नी सरपंच हैं और वे उप सरपंच थे। यह कहा जा सकता है कि गांव में उनकी अच्छी पकड़ थी। लेकिन उनके गांव के उच्च जाति के लोगों को दलित समुदाय के व्यक्ति का सरपंच चुना जाना अच्छा नहीं लग रहा था। पहले उनको धमकियां मिलती रहीं, फिर हमला कर जान से मार दिया गया।

गुजरात में यह कोई पहली घटना नहीं है। पिछले एक महीने में यह तीसरी घटना है जिसमें किसी दलित को अपनी जान गंवानी पड़ी। सिफ गुजरात नहीं, देश भर में दलितों का उत्पीड़न बढ़ता जा रहा है। आज इक्कीसवीं सदी में भी दलितों की हत्या, बलात्कार और जातीय उत्पीड़न की घटनाओं में कमी नहीं देखी जा रही है। पिछले एक दशक की हालात का सामना करना पड़ा है। सरकारी आंकड़े भी इस बात की पुष्टि करते हैं। नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) के आंकड़ों के मुताबिक पिछले दस साल (2007-2017) में दलित उत्पीड़न के मामलों में छियासठ फीसद का इजाफा हुआ है। इस दौरान देश में रोजाना छह दलित महिलाओं से बलात्कार के मामले दर्ज किए गए। आंकड़ों के मुताबिक भारत में हर पंद्रह मिनट में एक दलित के साथ कोई आपराधिक घटना घट रही है।

देश में दलितों के साथ घट रही आपराधिक और हिंसक घटनाओं को सिर्फ कानून–व्यवस्था के पहलू से देखना सही नहीं होगा। दलित उत्पीड़न की आपराधिक हिंसक घटनाएं संविधान और कानून का मखौल तो हैं ही, साथ ही ये बताती हैं कि हम आज भी जाति, वर्ण और लिंग के भेदभाव वाले समाज में रह रहे हैं। लेकिन गंभीरता से अध्ययन करने पर यह सामने आता है कि दलितों के साथ अपराध, हिंसा और अपमानजनक व्यवहार करने के पीछे मकसद कानून तोड़ना नहीं होता है। इसका कारण हमारे सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक ढांचे में निहित हैं सदियों से हमारे समाज में सिर्फ दलित ही नहीं, बल्कि आदिवासी और महिलाओं की स्थिति भी दोयम दर्जे में रही है। शास्त्रों में भले ही महिलाओं को देवी का दर्जा दिया गया हो, लेकिन जीवन के वास्तविक धरातल पर महिलाओं का दर्जा दलितों और शूद्रों से ऊपर नहीं था।

आजादी के बाद दलितों, आदिवासियों और महिलाओं की स्थिति में सुधार के लिए कई नियम–कानून बने। लेकिन आज तक संपूर्ण रूप से वे धरातल पर लागू नहीं हो सके। सवर्ण और पुरुष वर्चस्व वाला हमारा समाज दलितों–महिलओं को आज भी बराबरी का दर्जा नहीं देना चाहता। पुरुष और सवर्ण वर्चस्व वाला समाज आज भी दोनों को सेवक समझता है। ऐसे में जब भी वह किसी दलित और महिला को अपने से आगे बढ़ता हुआ देखता है तो उसे यह किसी अनहोनी से कम नहीं लगती है।

ऐसा भी नहीं है कि आजादी के बाद दलितों और महिलाओं की स्थिति में सुधार नहीं हुआ है। आजादी के बाद से ही दलितों,

(शेष पृष्ठ 4 पर)

सम्पादकीय

यहां हंगामा बिफरा क्यों है, चारों ओर यह कुहांसा सा क्यों है?

कवि दुष्यन्त कुमार ने अपनी गजल में कहा था–'यहां हंगामा बिफरा क्यों है, चारों ओर यह कुहांसा सा क्यों है? लगता है इस तालाब का पानी जहरीला हो गया है, जरूरी है यारो इसे जल्दी से बदल दिया जाये।'' आज देश के दूषित वातावरण पर दुष्यन्त कुमार की यह उक्ति सटीक बैठती है।

आज काश्मीर से कन्याकुमारी तक, बंगाल की खाड़ी से कच्छ (गुजरात) की खाड़ी तक चारों ओर धरना, विरोध प्रदर्शन, भारत बन्द, हड़ताल, आगजनी, मारपीट, हत्याओं की घटना घट रही हैं। केन्द्र और राज्य सरकारें मूकदर्शक बनकर इसके लिए एक दूसरे पर आरोप–प्रति आरोप लगा रहे हैं। आखिर देश में इस भयावह और दूषित वातावरण बनाने का जिम्मेदार कौन है?

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 2014 में भारत के प्रधानमंत्री बने और उनका 5 साल का कार्यकाल 2019 तक रहा। इस बीच प्रधानमंत्री मोदी जी की लोकप्रियता देश और विदेशों में शिखर पर पहुंच गई। उन्होंने नोटबन्दी की, जी.एस.टी. लागू की, बेकार शिक्षित युवकों के लिए 'स्टार्टअप' योजना शुरू की, मेक इन इंडिया और 'डिजिटल इंडिया' योजना का भरपूर प्रचार किया, विदेशों में काला धन वापिस लाने और प्रत्येक देशवासी के बैंक खाते में 15-15 लाख रु. जमा कराने और देश से भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, गरीबी, अशिक्षा को जड़ से खत्म करने का वायदा किया, पर अपने इस प्रथम प्रधानमंत्री काल में वे अपने इन वायदों को पूरा करने में नाकामयाब रहे। उल्टे बेरोजगारों को रोजगार देने के स्थान पर उनसे यह कहा कि 'वे पकौड़े बेचें' इसने उनके घावों पर नमक छिड़कने का काम किया। इस पांच साल के कार्यकाल में मुख्य समस्याओं से जनता का ध्यान बंटाने के लिए भाजपा, आरएसएस और कट्टर हिन्दूवादी लोगों को गौरक्षा के नाम पर मुसलमानों का दमन, शोषण, अपमान, मारपीट और खुलेआम कत्लेआम करने के लिए उकसाया गया। इसका परिणाम यह था कि भाजपा के इन गौरक्षकों ने गौहत्या के शक में कितने ही मासूम, बेकसूर, गरीब मुसलमानों को 'लीचिंग' (भीड़ द्वारा प्रताड़ना) करके मौत के घाट उतार दिया। उन्होंने मुस्लिम ही नहीं, जो दलित मरी गायों को ठिकाने लगाने के लिए हडवारी ले जा रहे थे ऐसे पांच दलित युवकों को 'गौरक्षा' के नाम पर ऊना (गुजरात) में मार–मार कर अधमरा कर दिया। गौरक्षकों के इस जघ्ननीय अपराध पर हमारे प्रधानमंत्री मोदी चुप्पी सादे रहे और उन निरपराधों के प्रति संवेदना के दो शब्द भी नहीं बोले।

गुजरात में जहां ऊना में दलित युवकों के साथ गौरक्षा के नाम पर हुए उत्पीड़न के खिलाफ विशाल जन आन्दोलन हुआ, वहीं इसके साथ इलाहाबाद यूनीवर्सिटी में दलित युवक रोहित बामूला को शासन– प्रशासन के उत्पीड़न से परेशान होकर आत्महत्या कर लेने से भी समस्त दलित समाज मोदी सरकार के विरोध में खड़ा हो गया। मोदी सरकार के इसी कार्यकाल में दलितों को उत्पीड़न से मिले सुरक्षा कवच–अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति उत्पीड़न कानून को

(शेष पृष्ठ 4 पर)

भारतीय दलित साहित्य अकादमी प्रकाशन

विश्व धरातल पर दलित साहित्य	डॉ. सुमनाक्षर	50/-
अंधा समाज और बहरे लोग	डॉ. सुमनाक्षर	60/-
सिन्धु घाटी बोल उठी	डॉ. सुमनाक्षर	50/-
अब नहीं रहेंगे हाशिये पर	डॉ. सुमनाक्षर	80/-
अम्बेडकर शतक	डॉ. सुमनाक्षर	50/-
विश्व विभूति डा. अम्बेडकर	डॉ. सुमनाक्षर	50/-
दलित लेखक परिचय ग्रंथ (अंग्रेजी)	डॉ. सुमनाक्षर	250/-
बुद्धा दू अम्बेडकर (अंग्रेजी)	डॉ. सुमनाक्षर	150/-
दलित साहित्य	डॉ. सुमनाक्षर	100/-
अम्बेडकर दर्शन	डॉ. सुमनाक्षर	40/-
हमारे संत और समाज सुधारक	डॉ. सुमनाक्षर	60/-
धर्म और समाज	डॉ. सुमनाक्षर	40/-
आदिम जाति चमार (इतिहास, धर्म, संस्कृति)	डॉ. सुमनाक्षर	300/-
दलित उद्घोष	डा. सुमनाक्षर	80/-
दलित साहित्य की हुंकार-सात समन्दर पार	डॉ. सुमनाक्षर	100/-
युगपुरुष बाबू जगजीवनराम	डॉ. सुमनाक्षर	200/-
प्राचीन आदिम जाति वाल्मीकि (इतिहास, धर्म, संस्कृति)	डॉ. सुमनाक्षर	100/-
सभ्यता, संस्कृति, समाज और साहित्य	आचार्य गुरुप्रसाद	100/-
डा. अम्बेडकर भजनावली	राजमल 'राज'	25/-
हमारे दलित गौरव	राजमल 'राज'	25/-
भारत रत्न डा. बी.आर. अम्बेडकर	राजमल 'राज'	25/-
मूल भारती से दलित	राजमल 'राज'	50/-
अम्बेडकरवाद बनाम सामाजिक परिवर्तन	राजमल 'राज'	80/-
दलित साहित्य–दशा और दिशा	डा. माता प्रसाद	200/-
दलित साहित्य से सामाजिक परिवर्तन	डा. माता प्रसाद	100/-
भारत की गुलामी के 22 सौ साल	प्रदीप कुमार मौर्य	250/-
सृजन के कण	जीपी पचौरिया 'दीप'	150/-
बौद्ध धर्म–गया से अयोध्या तक	प्रदीप कुमार मौर्य	120/-
गांधी, अम्बेडकर और दलित	प्रदीप कुमार मौर्य	100/-
सत्सम दर्शन	राजमल 'राज'	100/-
जागा मेहनतकश इंसान	राजमल 'राज'	50/-
हम एक हैं	डा. माता प्रसाद	60/-
रैदास से संत शिरोमणि गुरु रविदास	डा. माता प्रसाद	50/-
ताकि सनद रहे	डा. सुमनाक्षर	100/-

पुस्तक मंगाने के लिए मनीआर्डर से राशि अग्रिम भेजें, व्यवस्थापक,

दलित साहित्य सेन्टर

(भारतीय दलित साहित्य अकादमी)

बी-3/9, दूसरी मंजिल, माडल टाउन-1, दिल्ली-9

फोन : 27421449, 27421460, मो. 9810278936

ऐसा राम राज्य कभी नहीं चाहिए

• ओशो रजनीश

राम के समय को तुम रामराज्य कहते हो। हालात आज से भी बुरे थे। कभी भूलकर रामराज्य फिर मत ले आना। एक बार जो भूल हो गई, हो गईं अब दुबारा मत करना।

राम के राज्य में आदमी बाजारों में गुलाम की तरह बिकते थे। कम से कम आज आदमी बाजार में गुलामों की तरह तो नहीं बिकता और जब आदमी गुलामों की तरह बिकते रहे होंगे, तो दरिद्रता निश्चित रही होंगी। नहीं तो कोई बिकेगा कैसे? किए लिए बिकेगा? दीन और दरिद्र ही बिकते होंगे, कोई अमीर तो बाजारों में बिकने न जाएंगे। कोई टाटा, बिड़ला, डालमिया तो बाजारों में बिकेंगे नहीं?

स्त्रियां बाजारों में बिकती थीं। वे स्त्रियां गरीबों की स्त्रियां ही होंगी। उनकी ही बेटियां होंगी। कोई सीता तो बाजार में नहीं बिकती थी। उसका तो स्वयंवर होता था, तो कितनी बच्चियां बिकती थीं बाजारों में? और हालात निश्चित ही भयंकर रहे होंगे, क्योंकि बाजारों में ये बिकती स्त्रियों ओर लोग—आदमी और औरतें दोनों, विशेषकर स्त्रियां, राजा तो खरीदते ही खरीदते थे, धनपति तो खरीदते ही थे, बाजार से स्त्रियां तो नहीं खरीद ले आते। इतना बुरा आदमी तो आज पाना मुश्किल है जो बाजार से स्त्री खरीद कर लाएं। आज यह बात ही अमानवीय मालूम होगी। मगर यह जारी थी।

रामराज्य में शूद्र को हक नहीं था वेद पढ़ने का। यह तो कल्पना के बाहर की बात थी कि डॉ. अम्बेडकर जैसा अतिशूद्र और राम के समय में भारत के विधान का रचयिता हो सकता था। असंभव, खुद राम ने एक शूद्र के कानों में सीसा पिघलवा कर भरवा दिया था, गरम सीसा, उबलता हुआ सीसा। क्योंकि कहीं वेद के मंत्र पढ़े जा रहे थे, तो उसने वे छिपकर सुन लिए थे। यह उसका पाप था, यह उसका अपराध था और राम तुम्हारे मर्यादा पुरुषोत्तम हैं। राम को तुम अवतार कहते हो और महात्मा गांधी रामराज्य को फिर से लाना चाहते थे। क्या करना है? शूद्रों के कानों में फिर से सीसा पिघलवा कर भरवाना है? उसके कान तो फूट ही गए होंगे, शायद मस्तिष्क भी विकृत हो गया होगा। उस गरीब पर क्या गुजरी, किसी को क्या लेना—देना, शायद आंखें भी जब बाप अपनी बेटी का विवाह करता है तो उसको कहते हैं—कन्यादान। क्या गजब कर रहे हो। गाय—भैंस दान करो तो भी समझ में आता है, कन्यादान कर रहे हो? यह दान है? स्त्री कोई वस्तु है? ये असभ्य शब्द से असंस्कृत शब्द हमारे प्रयोग में बंद होने चाहिए। अमानवीय है, अशिष्ट है, असंस्कृत है। मगर युधिष्ठिर धर्मराज थे और दांव पर लगा दिया अपनी पत्नी को भी। हद का दीवनापन रहा होगा। पहुंचे हुए जुआरी रहे होंगे। इतना भी होश न रहा और फिर भी धर्मराज, धर्मराज ही बने रहे। इससे कुछ अंतर न आया। इससे उनकी प्रतिष्ठा में कोई भेद न पड़ा। इससे उनका आदर जारी रहा।

भीष्म पितामह को ब्रह्मज्ञानी समझा जाता था। मगर ब्रह्मज्ञानी कौरवों की तरफ से युद्ध लड़ रहे थे। गुरू द्रोण को ब्रह्मज्ञानी समझा जाता था। मगर गुरू द्रोण भी कौरवों की तरफ से युद्ध लड़ रहे थे। अगर कौरव अधार्मिक थे, दुष्ट थे तो कम से कम भीष्म में इतनी हिम्मत तो होनी चाहिए थी और अपना कोई दिमाग नहीं। तुम निपट मूर्ख हो।

निर्मल घोष, एकलव्य को मौजूदा हालात उस समय के पसंद पड़े होंगे। उस गरीब का कसूर क्या था? अगर उसने मांग की थी, प्रार्थना की थी कि मुझे भी स्वीकार कर लो शिष्य की भांति, मुझे भी सीखने का अवसर दे दो। लेकिन नहीं, शूद्र को कैसे सीखने का अवसर दिया जा सकता है? मगर एकलव्य अनूठा नवयुवक रहा होगा। अनूठा इसलिए कहता हूं कि उसका खून नहीं खौला, खून खौलता तो साधारण युवक, दो कौड़ी का। सभी युवकों का खौलता है, इसमें कुछ खास बात नहीं। उसका खून नहीं खौला। शांत मन से उसने इसको स्वीकार कर लिया। एकान्त जंगल में जाकर गुरू द्रोण की प्रतिमा बना ली और उसी प्रतिमा के सामने अनुसंधान करता रहा। उसी के सामने धनुर्विद्या का अभ्यास करता रहा। अद्‌भुत युवक था। उस गुरू के सामने, जिसने उसे शूद्र के कारण इन्कार कर दिया था। अपमान न लिया। अहंकार पर चोट लगी तो होगी, लेकिन शांति से, समता से पी गया।

धीरे—धीरे खबर फैलनी शुरू हो देने को राजी हो गया। उस गुरू को, जिसने दीक्षा ही नहीं दी कभी। यह जरा सोचो तो उस गुरू को, जिसने दुत्कार दिया था और कहा कि तू शूद्र है। हम शूद्र को शिष्य के रूप में स्वीकार नहीं कर सकते।

बड़ा मजा है। जिस शिष्य को शूद्र की तरह स्वीकार नहीं कर सकते, उस शूद्र की दक्षिणा कैसे स्वीकार कर सकते हो? मगर उसमें षड्‌यंत्र था, चालबाजी थी। उसने चरणों में गिरकर कहा—आप जो कहें, मैं तो गरीब हूं। मेरे पास कुछ है नहीं देने को। मगर जो आप कहें, जो मेरे पास हो तो मैं देने को राजी हूं। ये प्राण भी देने को राजी हूं। तो क्या मांगा? मांगा कि अपने दायें हाथ का अंगूठा काटकर मुझे दे दो।

जालसाजी की भी कोई सीमा होती है। अमानवीयता की भी कोई सीमा होती है। कपट की, कूटनीति की भी कोई सीमा होती है और यह ब्रह्मज्ञानी! उस गरीब एकलव्य से अंगूठा मांग लिया। और वह अद्‌भुत युवक रहा होगा निर्मल घोष! दे दिया उसने अपना अंगूठा। तत्क्षण काटकर अपना अंगूठा दे दिया। यह जानते हुए कि दायें हाथ का

जिनको तुम ऋषि–मुनि कहते हो, वे भी खरीदते थे। गजब की दुनिया थी। ऋषि–मुनि भी बाजारों में बिकती हुई स्त्रियों को खरीदते थे।

अब तो हम भूल ही गए वधू शब्द का असली अर्थ। अब तो शादी होती है नई–नई, तो वर–वधू को आशीर्वाद देने जाते हैं। हमको पता ही नहीं कि हम किसको आशीर्वाद दे रहे हैं? राम के समय में और राम के पहले भी 'वधु' का अर्थ होता था–खरीदी हुई स्त्री। जिसके साथ तुम्हें पत्नी जैसा व्यवहार करने का हक है, लेकिन उसके बच्चों को तुम्हारी सम्पत्ति पर कोई अधिकार नहीं होगा। पत्नी और वधु में यही फर्क था। सभी पत्नियां वधु नहीं थीं और सभी वधुएं पत्नियां नहीं थी। वधू नम्बर दो की पत्नी थी। जैसे नम्बर दो नम्बर की बही होती है न, जिसमें चोरी–चपाटी का सब लिखते रहते हैं। ऐसे नंबर दो की पत्नी थी वधु।

ऋषि–मुनि भी वधुएं रखते थे और तुमको यही भ्रांति है कि ऋषि–मुनि गजब के लोग थे। कुछ खास गजब के लोग नहीं थे। वैसे ऋषि–मुनि अभी भी तुम्हें मिल जाएंगे। इन ऋषि–मुनियों में और तुम्हारे पुराने ऋषि–मुनियों में बहुत फर्क मत पाना तुम। कम से कम इनकी वधुएं तो नहीं हैं। कम से कम ये भी खराब हो गई होंगी, क्योंकि ये सब जुड़े हैं–कान, आंख, मस्तिष्क, सब जुड़े हैं। और दोनों कानों में अगर सीसा उबला हुआ डाल दिया जाए, तो...! तुम्हारा खून क्या खाक उबल रहा है निर्मल घोष?

उबलते हुए सीसे की जरा सोचो। उबलता हुआ सीसा जब कानों में भर दिया गया होगा, तो चला गया होगा पर्दों को तोड़कर, भीतर–मांस–मज्जा तक को प्रवेश कर गया होगा। मस्तिष्क के स्नायुओं तक को चला गया होगा, फिर इस गरीब पर क्या गुजरी, किसी को क्या लेना–देना है। धर्म का कार्य पूर्ण हो गया।

ब्राह्मणों ने आशीर्वाद दिया कि राम ने धर्म की रक्षा की। यह धर्म की रक्षा थी और तुम कहते हो–मौजूदा हालात खराब है। युधिष्ठिर जुआ खेलते हैं, फिर भी धर्मराज थे और तुम कहते हो मौजूदा हालात खराब हैं। आज किसी जुआरी को धर्मराज कहने की हिम्मत कर सकोगे? और जुआरी भी कोई छोटे–मोटे नहीं, सब जुए पर लगा दिया। पत्नी तक को दांव पर लगा दिया। एक तो यह बात ही अशोभन है, क्योंकि पत्नी कोई सम्पत्ति नहीं है। मगर उन दिनों यही धारणा थी, स्त्री सम्पत्ति होती है।

उसी धारणा के अनुसार आज बाल ब्रह्मचारी थे और इतनी भी हिम्मत नहीं? तो खाक ब्रह्मचर्य था। यहां किस लोलुपता के कारण गलत लोगों का साथ दे रहे थे और द्रोण तो गुरू थे अर्जुन के भी और अर्जुन को बहुत चाहा भी था, लेकिन धन तो कौरवों के पास था, पद कौरवों के पास था, प्रतिष्ठा कौरवों के पास थी। संभावना भी यही थी कि वही जितेंगे। राज्य उनका था, पाण्डव तो भिखारी हो गए थे, इंच भी जमीन भी कौरव देने को राजी नहीं थे। कसूर कुछ कौरवों का हो, ऐसा समझ में आता नहीं। जब तुम ही दांव पर लगाकर सब हार गए तो मांगते किस मुंह से थे? मांगने की बात ही गलत थी। जब हार गए तो हार गए। खुद ही हार गए, अब मांगता क्या है?

लेकिन गुरू द्रोण भी अर्जुन के साथ खड़े ना हुए। खड़े हुए उनके साथ जो गलत थे।

यही गुरू द्रोण एकलव्य का अंगूठा कटवा कर आ गए थे अर्जुन के हित में, क्योंकि तब संभावना थी कि अर्जुन सम्राट बनेगा। तब उन्होंने एकलव्य को इन्कार कर दिया था शिक्षा देने से, क्यों? क्योंकि वह शूद्र था और तुम कहते हो, 'मौजूदा हालात पसंद नहीं। यह बात तुम किसी के कहने पर कह रहे हो। इसका अर्थ है कि तुम्हारा गई कि वह बड़ा विख्यात हो गया। तो गुरू द्रोण को बेचैनी हुई क्योंकि बेचैनी यह थी कि खबरें आने लगी कि अर्जुन उसके मुकाबले कुछ भी नहीं और अर्जुन पर सारा दांव था। अगर अर्जुन सम्राट बने और सारे जगत में सबसे बड़ा धनुर्धर बने, तो उसी के साथ गुरू द्रोण की भी प्रतिष्ठा होगी। उनका शिष्य उनका शागिर्द ऊंचाई पर पहुंच जाए, तो गुरू भी ऊंचाई पर पहुंच जाएगा। उनका सारा का सारा स्वार्थ अर्जुन में था। और एकलव्य अगर आगे निकल जाए तो बड़ी बैचेनी की बात थी।

तो यह बेशर्म आदमी, जिसको कि ब्रह्मज्ञानी कहा जाता है, यह गुरू द्रोण, जिसने इन्कार कर दिया था एकलव्य को शिक्षा देने में, यह उससे दक्षिणा लेने पहुंच गया। शिक्षा देने से इन्कार करने वाला गुरू, जिसने दीक्षा ही ना दी, वह दक्षिणा लेने पहुंच गया। हालात बड़े अजीब रहे होंगे। शर्म की कोई चीज होती है, इज्जत भी कोई बात होती है। आदमी की नाक भी होती है। यह गुरू द्रोण तो बिल्कुल नाक कटे आदमी रहे होंगे। जिस मुंह से, जिसको दुत्कार दिया था–उससे जाकर दक्षिणा लेने पहुंच गए। और फिर भी मैं कहता हूं एकलव्य अद्भुत युवक था, दक्षिणा अंगूठा कट जाने का अर्थ है कि मेरी धनुर्विद्या समाप्त हो गई। अब मेरा कोई भविष्य नहीं। इस आदमी ने सारा भविष्य ले लिया। शिक्षा दी नहीं और दक्षिणा में, जो मैंने अपने आप सीखा था, उस सबको विनिष्ठ कर दिया।

वह आज भी हो रहा है और मजे की बात यह है कि हमें यह स्वीकार भी है। हमारा कोई विरोध भी नहीं।•

ज्ञान की खोज में

साधु–संतों व साध्वियों का,
राजनीति में आना,
यह साबित करता है
कि 'ईश्वर' एक भ्रम है।
अधिकार 'संसद' में मिलता है
ज्ञान की खोज में जिस तरह
पशुओं को डराने के लिए
खेतों में पुतले खड़े करते हैं
वैसे ही इंसान को डराने के लिए
देवी देवताओं के पुतले
खड़े करते हैं।
साधु और साध्वी लोग
मंदिरों से निकलकर
संसद की ओर जा रहे हैं।
और हमारे पढ़े लिखे लोग
अनपढ़ की तरह
मंदिरों की ओर
पागलों की भांति भाग रहे हैं।•

–श्रीमती सुशीला देवी वाल्मीकि

सामाजिक क्रांति के महानायक बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर

• संत प्रेमदास जस्सल

भारत रत्न बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर बहुजन समाज के महान सपूत एवं देश में सामाजिक क्रांति के महानायक थे। आप आम आदमी के मानवाधिकारों के लिए एक ऐसे पथ–प्रदर्शक बने जिन्होंने भारतीय जनसाधारण के लिए एक सफलतापूर्वक अभियान चलाकर पिछड़े वर्गों के उत्थान का कार्य किया। 600 वर्ष पूर्व मध्ययुग के संतों की क्रांति को सम्प्रदायिक तत्वों ने लुप्त कर दिया था। डॉ. अम्बेडकर ने पुनः उसी समता और समरसता की विचारधारा को मुख्य रखकर मानवीय अधिकारों के लिए संघर्ष का शंखनाद किया।

भीमराव की उच्च शिक्षा के कारण आपको संविधान निर्माण का कार्य सौंपा गया, जिससे आप संविधान के जनक कहलाए। यदि डॉ. अम्बेडकर अंग्रेजों से दलितों के लिए अधिकार छीन सकते थे तो संविधान निर्माण में दलितों को अधिकार दिलाने के मामले में पीछे कैसे रह सकते थे? उन्होंने अथक परिश्रम द्वारा संपूर्ण दलित वर्ग के लिए बहुत से मूलभूत अधिकार व सुविधायें उपलब्ध कराईं। आज होकर अपना उज्ज्वल भविष्य बनाना था। सन् 1913 में अपने बड़ौदा रियासत के महाराज से छात्रवृत्ति प्राप्त कर अमेरिका में कोलंबिया यूनिवर्सिटी में प्रवेश कर 1915 में वहां से एम.ए. की उपाधि प्राप्त की। वहीं से ही 1916 में पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त कर आप अमेरिका से लंदन पहुंच कर लंदन यूनिवर्सिटी में प्रवेश लिया, परन्तु छात्रवृत्ति समाप्त होने के कारण आपको 1917 में ही भारत लौटना पड़ा। प्रतिज्ञा पत्र की शर्तों के पालन हेतु डॉ. अम्बेडकर बड़ौदा रियासत की सेवा के लिए बड़ौदा पहुंच गए। कुछ समय विभिन्न विभागों में अनुभव दिलाने के बाद महाराज आपको वित्त मंत्री बनाना चाहते थे। अतः उन्हें सैन्य सचिव नियुक्त किया गया। ऐसे उच्च पद पर आसीन होने के बावजूद आपको यहां भी अछूतपन का घोर अपमान झेलना पड़ा। सन् 1919 में आपने कोल्हापुर के महाराज छत्रपति शाहूजी से मिलकर जनसाधारण के जनजागरण हेतु एक पाक्षिक समाचार पत्र 'मूकनायक' का प्रकाशन आरम्भ किया।

सन् 1921 में पुनः लंदन जाकर पड़ता है। गांव के लोगों की भलाई के लिए तालाब आदि बनवाये जाते हैं। ऐसा दुखद समय था जब उस तालाब से पशु–पक्षी तो पानी पी सकते हैं परन्तु निम्नवर्ग के लोग उससे पानी नहीं पी सकते थे। डॉ. अम्बेडकर ने मार्च, 1927 को महाड़ नामक स्थान पर दलितों की एक विशाल सभा आयोजित की। उसमें अध्यक्षीय भाषण में कहा कि आप दास बनकर श्रम न करो। आप शिल्पकार हो, अपने में स्वाभिमान की भावना उत्पन्न करो और अपनी शक्ति को पहचानो। इस तरह अपने लोगों का जलूस लेकर चबदार तालाब पर गए और सबने पानी पीया। अछूतों ने सवर्णों के तालाब से पानी पीकर सदियों से लगे प्रतिबंध का खात्मा किया। आपकी इस घटना ने भारत के अछूतों में एक अभूतपूर्व हिम्मत जगाई।

सन् 1930 में गोलमेज अधिवेशन में दलितों का नेतृत्व करते हुए आपने मांग की कि दलित वर्ग को दूसरे नागरिकों के समान अधिकार दिये जाएं, कानून में प्रत्येक प्रकार का भेदभाव व समाज में ऊंच–नीच पूर्णतः समाप्त हो। विधान सभाओं में अपने प्रतिनिधि अपने लोगों द्वारा ही चुनने की छूट हो। दलितों के लिए सरकारी नौकरियों में पूर्ण प्रतिनिधित्व दिया जाए। इस प्रकार दलितों के अधिकारों के लिए बाबा साहब संघर्ष करते रहे। अंततः 24 सितंबर 1932 को गांधी और अम्बेडकर के बीच समझौता हुआ जो 'पूना पैक्ट' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। भारत की स्वतंत्रता के बाद 30 अगस्त, 1947 को आपको संविधान की ड्राफटिंग कमेटी का अध्यक्ष चुना गया। यदि डॉ. अम्बेडकर अंग्रेजों से दलितों के लिए अधिकार छीन सकते थे तो संविधान निर्माण में दलितों को अधिकार देने के मामले में पीछे कैसे रह सकते थे। भारतीय संविधान में भी समस्त दलित वर्ग के लिए बहुत सी मूलभूत सुविधायें उपलब्ध कराई। एक दिन बाबा साहब ने कहा था कि बड़ी कठिनाई के साथ मैं यह काफिला जहां तक ला सका हूं। चाहे कुछ भी हो यह काफिला आगे ही बढ़ता रहना चाहिए। यदि मेरे अनुयायी इसको आगे न ले जा सकें तो भी इस काफिले को किसी भी हालत में पीछे नहीं जाने देना चाहिए। करोड़ों लोगों को जगाकर और उन्हें प्रगति के मार्ग पर खड़ा करके आप 6 दिसम्बर 1956 को परिनिर्वाण को प्राप्त हुये। आज बाबा साहब हमारे बीच नहीं हैं। परन्तु वे हमारी प्रगति के बहुत से मार्ग खोल गए हैं। यहां तक कि हमारे छीने गए अधिकारों को पुनः प्राप्त करने के लिए एक महामंत्र 'शिक्षित बनो, संगठित रहो और संघर्ष करो' भी देकर गए हैं जिस पर अमल करना हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है। •

हिमायती

हिन्दी पाक्षिक पत्र

अम्बेडकर मिशन का प्रतिनिधि पत्र है। इसे मंगाइये, पढ़िए और दूसरों को पढ़ाइये। इससे जन चेतना जागृत होगी और दलित संघर्ष तीव्र होगा। इसका सहयोग वार्षिक शुल्क 100/- और आजीवन 1000/- मनीआर्डर से आज ही भेजें–

सम्पादक : हिमायती

बी 3/9, दूसरी मंजिल,
माडल टाउन-1, दिल्ली-110009

उनकी शक्ति के बल पर ही दलित वर्ग के लोग अपने आपको गर्व से भारतीय नागरिक मानते हैं।

भीमराव का जन्म माता भीमाबाई की कोख से 14 अप्रैल 1891 में सैनिक छावनी महु, इन्दौर, (मध्यप्रदेश) में हुआ था। तत्काल आपके पिता रामजीराव अंग्रेजी सेना में सूबेदार थे। सन् 1894 में रामजीराव सेना से सेवानिवृत्त होकर सपरिवार बम्बई में आकर रहने लगे। संतों के अनुयायी पिता रामजीराव अपने बेटे भीम को पढ़ाने का संकल्प कर चुके थे। वे भीम को एक अंग्रेज के स्कूल में ले गए। वहाँ भीम को प्रवेश तो मिला परन्तु कई एक शर्तें लगाई गईं कि वह अपने घर से अपना टाट बैठने के लिए लायेगा, दूसरे बच्चों से दूर बैठेगा, ब्लैकबोर्ड के पास नहीं जायेगा, वह मटके से खुद पानी नहीं पियेगा तथा दूसरे बालकों के साथ खेलों में भाग नहीं लेगा। पिता रामजीराव ने उस अछूतपन के दौर में भी अपने बेटे भीम को एक महान विद्वान बनाने की ठान रखी थी। अपने परिश्रम के बल पर अस्पृश्य छात्रों में मैट्रिक की परीक्षा पास करने वाला भीमराव पहला विद्यार्थी था। जनवरी 1908 को भीमराव को एलफिंस्टन कॉलेज में प्रवेश मिला यहां से आपने स्नातक की डिग्री प्राप्त की।

भीमराव को अपने पैरों पर खड़े 'मास्टर ऑफ साइंस' की डिग्री हासिल की। 1923 में आपने 'डॉक्टर ऑफ साइंस' की डिग्री प्राप्त कर उसी वर्ष डॉ. अम्बेडकर एम.ए., पीएच.डी., एम.एससी और बार एट–लॉ बनकर वापिस बम्बई आ गए। शिक्षा के दौरान लंदन में विद्यार्थियों की यूनियन में दिए गए 'भारत में एक उत्तरदायी सरकार के दायित्व नामक एक लेख ने लंदन के शिक्षा क्षेत्रों में हलचल मचा दी और यह कहा जाने लगा कि डॉ. अम्बेडकर एक क्रांतिकारी भारतीय हैं। इस प्रकार के अनेकों उदाहरणों से वह अपने आप को एक सच्चा राष्ट्र भक्त प्रमाणित कर चुके थे। वे अब अछूतपन के अभिशाप को भारतीय समाज से दूर भगाना चाहते थे। मार्च 1924 में आपने प्रमुखतः से समाज सुधार का काम शुरू किया। 20 जुलाई, 1924 को आपके प्रयासों द्वारा बम्बई में 'बहिष्कृत हितकारिणी सभा' स्थापित की गई। उनकी आवाज में वेदना थी, एक कसक और तड़प थी। उनका कथन था 'गुलामों को यह आभास करा दो कि वे गुलाम हैं फिर वे विद्रोह कर देंगे।'' आपकी दर्द भरी आवाज ने मूक एवं गरीब जनता को जागृत कर दिया। आप जानते थे कि आजादी तथा अधिकार कभी भिक्षा की तरह मांगने से नहीं मिलते। इसके लिए संघर्ष करना

जरा कदम तो आगे बढ़ाओ साथी

कौ
अकेला चना
भाड़ नहीं फोड़ सकता ?
यह सवाल आज आप
'वाजपेयी से कीजिए
जिसकी
13 महीने की स्थिर सरकार
केवल 'अकेले' एक चना से
यानी एक व्यक्ति के 'वोट' से चली
गई
औ
गिनती
बेमायने हो गई।
यही एक सवाल आप
महामना दिग्विजय रावण से कीजिए
जिसकी सोने की लंका औ
पूरा राजपाट
अकेले विभीषण के कारण
धूल में मिल गया।
यही एक सवाल आप
कौ
जिनका सम्पूर्ण राजपाट
अकेले कृष्ण के बलबूते
कुरुक्षेत्र में 'स्वाहा' हो गया।
यही एक सवाल आप
राम से कीजिए
जो अकेली कै
चौ
अयोध्या के राजपाट से अलग हो
दर–दर की धूल चाटते घूमें।
इसीलिए
मै
अकेले की शक्ति का
मूल्यांकन करो
'अकेला' ही
एक एटम बम
वह शक्ति है
जो सारे जगत को
हिलाकर रख सकता है
आप अकेले है
आगे बढ़ाओ साथी
तुम्हारा
एक कदम
ग्यारह में बदल जायेगा
फिर एक सौ
औ
फिर
हजार, औ
लाखों की तादाद की
शक्ति में बदल जायेगी।

–डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर

भीम वन्दना

भारत मां के लाल भीम तुम,
भीमा बाई के प्रिय नंदन
रमा–पति है भीम राव हम,
करते हैं तुमको वंदन
तुम संकट झेल के जग में,
महाशिक्षाविद् विद्वान बने
तुम विश्व दार्शनिक कहलाये,
भारत के रत्न महान बने।
दलितों को तुमने ही बाबा,
करके संघर्ष उठाया था
भारत की नारी को तुमने,
शोषण से मुक्त कराया था।
तुम संघर्षी सम्राट तुम्हें,
हम करते बारम्बार नमन
रमा–पति है भीमराव.....
मनु विधान जलाया तुमने,
भारत को संविधान दिया
ऊंच–नीच का भेद मिटा,
सब धर्मों को सम्मान दिया।
बौद्धधर्म अपनाया तुमने,
बेशक ऊंचा काम किया
बोधिसत्व कहाये बाबा,
जग में ऊंचा नाम किया।
संतोष कह कुरबां होकर,
तुम खिला गए अपना गुलशन
रमा–पति है भीमराव।

– संतोष कुमार कलोशिया

हिमायती
4 / जनवरी (द्वितीय), 2020 (कुल पृष्ठ 4)
पोस्टल डिस्पेच तिथि : 16-17 जनवरी, 2020

आर. एन. आई. नं. 40611/62
रजि. G-3/DL(N)/090/2018-2020
प्रकाशन तिथि : 14 जनवरी, 2019

सम्पादकीय का शेष....यहां हंगामा बिफरा क्यों है, चारों ओर यह कुहांसा सा क्यों है?

सुप्रीम कोर्ट ने कमजोर करने की जुर्रत की, उसके विरुद्ध भी दलितों को विशाल आन्दोलन करने के लिए सड़क पर आना पड़ा। दलितों के आक्रोश को समझते हुए मोदी सरकार को उस एक्ट की शक्तियों को पूर्ववर्ती रखने के लिए बाध्य होना पड़ा।

देश में मुसलमान असहिष्णुता के वातावरण में बेबस व भयभीत बन गये, पर देश के दलित बाबा साहब डा. अम्बेडकर के 'भारतीय संविधान' को किसी तरह कमजोर होते नहीं देखना चाहते थे, इसलिए पूरे देश में वे मोदी सरकार को उखाड़ फेंकने के लिए लामबन्द हो गये, पर तभी पुलवामा में पाकिस्तान के हमले से हमारे मारे गये 42 सेना के जवानों और उसके बाद उनके खून का बदला लेने के लिए मोदी सरकार द्वारा की गई बालाकोट में 'सर्जिकल स्ट्राईक' ने देश के लोगों के अन्दर मोदी सरकार के लिए संजीवनी का काम किया। उसके बाद मोदी जी के पुराने वायदों को भुलाकर देश के स्वाभिमान और सुरक्षा के लिए सभी ने एकमत हो फिर से मोदी सरकार का साथ दिया। इसका परिणाम यह सामने आया कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी अपने दूसरे कार्यकाल के लिए भारी बहुमत से अपनी पार्टी को जीताकर पहले से भी ज्यादा लोकप्रिय, शक्तिशाली, एकक्षत्र प्रधानमंत्री के रूप में शपथ लेकर प्रधानमंत्री बने।

अपने दूसरे प्रधानमंत्री कार्यकाल की शपथ लेते हुए मोदी जी ने नया नारा दिया था–'सबका साथ, सबका विकास और सबका विश्वास', पहले कार्यकाल में उनका नारा था– 'सबका साथ सबका विकास।' अब इसमें 'सबका विश्वास' और जोड़ दिया गया। भारत की जनता को भी विश्वास था कि अबकी बार अपने दूसरे कार्यकाल में मोदी जी अपनी उन कमियों और वायदों को पूरा करेंगे जो उन्होंने पहली बार प्रधानमंत्री पद की शपथ लेते हुए किये थे और लाल किले के प्राचीर से हर साल स्वतंत्रता दिवस पर देश के महान सेवक व ईमानदार चौकीदार के रूप में कार्य करने का जनता को विश्वास दिलाया था। पर मोदी जी के दूसरे प्रधानमंत्री काल में क्रमबद्ध कुछ ऐसे कार्य हुए जिनसे लोगों के अन्दर मोदी जी के प्रति 'विश्वास' की जगह 'अविश्वास', नफरत, द्वेषभावना और कट्टर हिन्दू होने की भावना उभरने लगी।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने नये मंत्रीमंडल का गठन करते हुए भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह को देश का गृहमंत्री बनाया। किसी भी देश का गृहमंत्री प्रधानमंत्री के बाद सबसे शक्तिशाली व्यक्ति होता है। इस गृहमंत्री पद पर अमित शाह जी को बैठाये जाने पर किसी ने भी उनकी कार्य क्षमता और कार्यशैली पर सवाल नहीं उठाया। सभी की उनके प्रति सकारात्मक भावना थी। इसको इस बात से भी बल मिला जब जम्मू कश्मीर से धारा 370 व 35–ए को हटाकर और उसके विशेषाधिकार को खत्म कर देश में अन्य राज्यों के सामने लाकर खड़ा कर दिया। दलित समाज ने प्रधानमंत्री व गृहमंत्री के इस कदम की प्रशंसा की, क्योंकि बाबा साहब डा. अम्बेडकर जम्मू–कश्मीर के विशेषाधिकार के पक्ष में नहीं थे। वहां अब धारा 370 खत्म होने पर दलितों को उनके आरक्षण का संवैधानिक अधिकार मिल सकेगा। इसके लिए दलित समाज की ओर से उनका धन्यवाद भी किया गया।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के दूसरे कार्यकाल में लोगों के विरोधी स्वर तब उठने लगे जब गृहमंत्री अमित शाह ने आसाम में नागरिक रजिस्ट्रशन प्रक्रिया शुरू की और वहां के 19 लाख लोगों की नागरिकता खत्म कर दी। उस समय कहा गया कि जिन लोगों की यह नागरिकता खत्म की गई है, वे पाकिस्तान, अफगानिस्तान और बंगलादेश से आये 'घुसपैठिये' हैं और अब उन्हें उनके मूल देश में जाना होगा। गृहमंत्री शाह के इस कदम ने आसाम के ही नहीं, उसके बाहर देश के अन्य राज्य में दशकों से रह रहे अल्पसंख्यक मुसलमानों के बीच भय उत्पन्न कर दिया कि अब उनकी भी नागरिकता खत्म करके भारत छोड़ने को कहा जा सकता है। अब चूंकि मोदी सरकार लोकसभा व राज्य सभा में बहुमत में है तो वह ऐसा कानून पास कर भी सकते हैं। उनकी यह शंका तब सच साबित हो गई जब नागरिक संशोधन बिल (सीएए) दोनों सदनों में पास होकर कानून बन गया जिसमें कहा गया कि पाकिस्तान, अफगानिस्तान, बंगलादेश में प्रताड़ित हिन्दू, सिख, बौद्ध, पारसी, जैन को भारत की नागरिकता दी जायेगी। इसमें मुसलमानों का नाम न होने पर भारत के मुसलमानों में भय, दहशत, नागरिकता खत्म किये जाने का भूत मंडराने लगा। इसके साथ ही संसद में गृहमंत्री अमित शाह ने घोषणा कर दी कि देश में 'राष्ट्रीय नागरिकता रजिस्ट्रशन' का काम भी शुरू किया जा रहा है और जो भारत के नागरिक नहीं होंगे, उन्हें चुन–चुनकर देश से बाहर निकाला जायेगा। इससे इसके विरोध में देश के मुसलमानों के अन्दर खलबली मच गई कि अब उन्हें भारत की नागरिकता से वंचित कर मोदी सरकार भारत को 'हिन्दू राष्ट्र' बनाने पर तुली है। इसलिए देश के सभी राज्यों में इस कानून के विरुद्ध प्रदर्शन शुरू हुए। जामिया मिलिया यूनीवर्सिटी, अलीगढ़ यूनिवर्सिटी, जे.एन.यू. के छात्र–छात्रायें भी इस काले कानून के खिलाफ सड़कों पर आ गये। उधर 'हिन्दू राष्ट्र' बनाये जाने की गृहमंत्री अमित शाह की योजना के खिलाफ देश के दलित, शोषित, पिछड़े, अल्पसंख्यक लोग भी इसे बाबा साहब डा. अम्बेडकर के 'भारतीय संविधान'' को खत्म करने के विरोध में सारे देश में खड़े हो गये। वे भारतीय संविधान की रक्षा के लिए और देश को ब्राह्मणवादी हिन्दू

पृष्ठ 1 का शेष...दलित उत्पीड़न से उठते सवाल

पिछड़ों, अल्पसंख्यकों और महिलाओं के कल्याण के लिए कई योजनाएं शुरु की गई। इसका फायदा भी उन्हें हुआ है। पहले दलितों के साथ होने वाले अपराध सामने नहीं आ पाते थे। लेकिन शिक्षा और जागरूकता के बढ़ने से दलितों के साथ होने वाले अपराध अब सामने आने लगे है। आधुनिक शिक्षा ने दलितों को रोजगारोन्मुख बनाया है। रोजगार और राजनीतिक चेतना से दलितों के जीवन में बदलाव भी आया। राजनीतिक बदलाव से भी दलितों में चेतना का संचार हुआ है। ऐसे में पहले की तरह उनका उत्पीड़न करना आसान नहीं रह गया है फिर भी सामाजिक–आर्थिक रूप से कमजोर होने के कारण उन पर होने वाले अपराध अभी बंद नहीं हुए हैं, बल्कि पिछले कुछ सालों में तो ज्यादा ही बढ़े हैं।

राजनीतिक चेतना से युक्त और सरकारी नौकरियों में बढ़ती भागीदारी से दलित समाज अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हुआ है और उसके जीवनस्तर में भी बदलाव आया है। आज दलित समाज अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हुआ है और उसके जीवनस्तर में भी बदलाव आया है। आज गांव–देहात में सवर्ण–सामंतों के खेतों में काम करने के बजाय दलित शहरों में मजदूरी करना ज्यादा पसंद करता है। ऐसे में उच्च वर्ग के लोगों को यह बुरा लगता है कि पीढ़ी दर पीढ़ी आश्रित रहने वाला आज हमारे बराबर खड़ा होने की कोशिश कैसे कर रहा है? संविधान में सबको बराबरी का अधिकार मिला है कानून की नजरों में सब एक समान हैं, सवर्ण इस विचार से आज भी सहमत नहीं होता है। अब चूंकि दलित और महिला हमेशा सवर्णों और पुरुषों के सामने कमतर माने जाते रहे हैं, ऐसे में वह दलितों को बराबरी करते देख बौखला जाते हैं। बिना किसी वाजिब कारण के वे आज भी अपनी जायज–नाजायज मांगों को दलितों से पूरा कराना चाहते है। लेकिन समय के साथ आए बदलावों ने दलितों के भीतर नई चेतना का संचार किया। अब दलित चुपचाप उत्पीड़न को सहने और गांव–घर में ही निपटाने की बजाय थाने ओर अदालत का रूख करता है। दलितों के इस व्यवहार से सवर्ण सामंती ताकतें और चिढ़ती हैं और दलितों के खिलाफ अपराध बढ़ते जाते हैं। ऐसे में देश के तमाम हिस्सों में रोज दलितों के साथ हिंसा की घटनाएं सामने आ रही हैं।

पिछले पांच वर्षों का आंकड़ा देखें तो दलितों और आदिवासियों पर हमले बढ़े है। लेकिन कुछ दिनों पहले देश में दलित उत्पीड़न नहीं, बल्कि दलितों के हित में बने कानूनों के दुरुपयोग की चर्चा जोरों पर रहीं। देश भर में एक भ्रम रच गया कि अब दलित कानून की आड़ में सवर्णों को बेवजह फंसाया जा रहा है। हाल में सुप्रीम कोर्ट का एक फैसला आया था, जिसमें एससी–एसटी एक्ट के दुरुपयोग को रेखांकित करते हुए बदलाव किए गए थे। सर्वोच्च अदालत ने कुछ अहम दिशा–निर्देशों तय किए थे जिससे दलित समुदाय के किसी व्यक्ति के साथ घटित आपराधिक घटना की जांच के बाद ही मुकदमा दर्ज करने और गिरफ्तारी की बात थी। सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले का देशव्यापी विरोध हुआ और केंद्र सरकार ने कदम पीछे खीचं लिए। अदालत के फैसले के मद्देनजर कंद्र सरकार ने एक संशोधन विधेयक लाकर एससी–एक्ट को पूर्व की स्थिति में ला दिया।

ऐसे में यह सवाल उठता है कि जब देश में किसी दलित के साथ हुई आपराधिक घटना की शिकायत के बाद तुरंत एफआईआर और गिरफ्रतारी का नियम है तो दलितों के साथ इतनी आपराधिक घटनाएं कैसे घट रही हैं? असली सवाल यही है। आश्चर्यजनक रूप से सत्य तो यह है कि दलितों के साथ हिंसा आदि के मामले में एफआइआर दर्ज होने का प्रतिशत बहुत ही कम है। यदि मामला दर्ज भी हो गया तो दबाव और कोर्ट–कचहरी में व्याप्त भ्रष्टाचार की वजह से दोषी को सजा मिलने का आंकड़ा बहुत ही कम है। ऐसे में दलित–आदिवासियों के हित में कानून होने के बावजूद जमीनी स्तर पर उसके सही क्रियान्वयन न हो पाने के कारण दलितों–आदिवासियों और महिलाओं के साथ होने वाले अपराध में कमी नहीं हो रही है। •

वर्णव्यवस्था से बचाने के लिए जी जान से जुटे हैं। इसी से देश में अराजकता, भय, लूट खसोट, मारपीट, तोड़फोड़, आगजनी का माहौल बन गया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बार–बार लोगों को कहा है कि ऐसा कुछ नहीं होने वाला, अभी इस पर न संसद में और न ही किसी बैठक में इस पर बात हुई है, पर दूसरी ओर गृहमंत्री अमित शाह संसद में बार–बार कह चुके हैं कि जो भारत का नागरिक नहीं होगा, उन्हें चुन–चुन कर देश से बाहर भेजेंगे। अब देश के लोग दुविधा में हैं कि वे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आश्वासन को मानें या गृहमंत्री अमित शाह के संसद में दिये भाषण को सच मानें?

देश आज भयंकर परिस्थितियों से गुजर रहा है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी को आगे आकर अभी नागरिकता संशोधन कानून तथा राष्ट्रीय नागरिकता रजिस्ट्रशन को तब तक ठंडे बस्ते में डालना होगा जब तक इन पर देश में आम सहमति न बन जाए और देश में सभी धर्मों के लोगों के अन्दर विश्वास, भाईचारा, देश प्रेम की भावना का संचार न हो जाए।•

– डा. सोहनपाल सुमनाक्षर

स्वामी, सम्पादक/ प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर द्वारा वन्दना आफसेट प्रिन्टर्स, A-9 सराय पीपलथला एक्सटेंशन, दिल्ली-33 में मुद्रित तथा रजि. कार्यालय : 233 टैगोर पार्क, माडल टाउन, दिल्ली-9 से प्रकाशित। ❑ सह सम्पादक - श्रीमती त्रिलोचन सुमनाक्षर ❑ व्यवस्थापक : जय सुमनाक्षर, फोन : 27421449, मो. 9810278936 **Email-sumanakshar@ymail.com**

नोट : हिमायती में प्रकाशित रचनाओं के लिए सम्पादक की सहमति जरूरी नहीं। हिमायती से सम्बन्धित किसी भी कानूनी कार्रवाई का क्षेत्र दिल्ली न्यायालय तक ही सीमित है।

सम्पादकीय कार्यालय : बी 3/9, दूसरी मंजिल, माडल टाउन-1, दिल्ली-110009